

१३ नमः श्रीसर्वस्वनामः॥

॥ अथ शैविक विधि ॥ पादनथय रूपसा विधिथं स्थापय ॥ गुप्ते
दपदने विसृज नयाय कावनापडी क्राय कृतहामन कवनासगय प्रंजव साइर धनि कालि ध गय वा क पि
सुसंकपयाय वा के ॥ उ नमः ॥ गवत स च इति य प्रिसा धन जा जायत था गता प्रहं क संप क स व धाय
तदथा उ स्वधने र विस्र धने र स व पाप विस्र धन शुद्ध वि शुद्ध दि मे गत अस क नाम धाय स व क
मा वन न वि ए म ह सा धा वा ॥ वा गं व प्रं व वा ॥ अथ न पा न ड म जा ड अया वाने जा च क वा द स न वा क
विया ड व द या च क वा ड उ व द र ए म धा रि ड ए म वा रुं वा धन ज ड वा थ क न स च ग व दा का या ड

वि

उ

वेग घाच क आया गव गाय गव गदा रु स्वी को ज को इ ध न आ य वा थ न वे ग त य थ म स हा हा स्वी ज वा
य क य प्र ह ल त य क वा क उ वे प्रा च ना य स्वा हा उ अ की ला य स्वा हा उ न च स र वा य स्वा हा उ अ मि
गा ला य स्वा हा उ अ मा ध सि क्ष स्वा हा वा थ न वे ग त य वा स्वि या उ वा क वा उ स र्व इ र्ग ति य त्रि स्र ध न वे ग
रु ग गा न क स्य व द्वा द के स्वा हा वा थ न धू ग य थ न स्ना न या ग क वा का क उ अ सी गै री नि रु त स्य र ज
म द्वा न वि नि मू कं या हि मा ग न न र्ग य स र्व इ र्ग ति वि त्रा अ य स र्व इ र्ग ति य त्रि स्र ध न वे ग र का न
का य अ र्घ्य प्र ति ष्ठ सा हा स र्व स गा य ग व ग दा रु ज स्वी त स्य अ र्घ्य वि य वा थ न वे ग उ ज म का स्वा न

॥ २ ॥

॥ २ ॥

४९

नेचदं। सक्तवः साइइ। धावा। सिवा। सत। किंतिनेवाके। उंमन्यमन्यमहामनेसाहा। धनगवमागा। दवाक्रः।
मगलसक्तपूजा। उंनश्याहप्राजयाकपिनागवमागायप्रमामिहं। उंईईईईमहयैवेणाचर्यनमस्तुते।
धनकमहामलविया। देवगा। वयस्यैयिथि। गुपः। गीग। कसतयक। धनकमसपुनिकासायवाके। रावनाव।
उंससागगायमिगमासमगास्यतीगगायकाभसं। सर्वदेवतादिशि। रगवीता। गुनवसा। लीक। वनादेव।
नागा। रतापगा। पिता। चाद्या। सर्वप्रागत्यदृष्टं। सवैपजाप्रयुक्तं। ब्रह्मा। गुलवर्त्तु। ला। महां। ब्रह्मरसा।
पद्वधता। रुस४। सर्वदृगतिविगमाध। ससा। नावाधप्राप्य। नचक। गिर्यकुप्रकृतिर्घोय। इवीनत्रा। मि

थच्छक्रेद्विमीणापसगतिप्रायः॥ अन्त्यान्तरगणसर्वधर्मोपनमनगणविगणसर्वधर्मोपनमन
 प्रयत्नसर्वधर्मो॥ उं वज्रवर्षसर्वविगणवज्रवर्धनः॥ थन कृत्स्नरगिकथगुणविधिर्थः सनातनपूजा
 कितनेकाकेशः उं मन्त्ररसहामन्त्रस्वाहा॥ थन कृत्स्नरदियः आसविपूजयः साक्षिथयः उं उं काकवाय
 केशः कृत्स्नरगुल्लेहायकेशः थनयित्यग्वदाचीनकेशः गदाभस्याजाइथनयित्यग्वदाविनकेशः थन कृत्स्ना
 पयतमानकाः कृत्स्नमालुकोशनको॥ वाकेशः अथकायः जथागतथागतायादिदिर्मीगतयसतुपिनाः अस्म
 कनामधाययुतगताथैवयसाम्यससिकलीकि कायद्रुपागुनार्थः ॐ कृत्स्नासत्सुप्रगतिगौ॥ कृत्स्न

विकल्पिं लुमार्गसंस्वधमायविकाजस्वार्नकाकर्पिं लुंसीयशामिस्वधाहं विकल्पे द वा कसते वा धन
 लव नास्तीच्छुशोरगय के वा उं गिमादकमाचमनं प्रतिगिर द्रुतां वा उं मरा रमहामूनस्वधा वा धनस्वान
 याय के लीरवे वा उं नमा रगवतं सर्वे इर्जा गियलिस्व धनया जायतथा गताया न हं न सीम्य के सीधु धायत
 द वा उं मधनरविमधनरसर्वे यापविमधमं गु धाविगु धादिमिगतमम कनाम धाय सर्वे कसो व
 विमधनस्वधाहं लीउव के कतिर लाचतिर लीचतिर प्रगिर हन हनर सर्वे कसो व क्विस्व धनस्वधाहं वा
 वा इह वा मगो धी प्रतिह न हनर सर्वे कसो व क्विस्व धनस्वधाहं वा धलि वा उं वीधिसस्वापि लुनस्वधा

पिं

॥५॥

धनकाल ॥ ॐ नमः ॥ गवतः प्रमृत्त केतु प्राजायत आगता या र हं ते संभवसं व क्षयग द धां ॐ अमृत
प्रमृत्तार व प्रमृत्तमं र के अमृत्तदि कं त कामि न्य अमृत्त नाम धाय सर्वकामां कुर्यं क प्रि स्व धा वा ध वा
ॐ पू ल र म हा पू ल अय प्रमृत्त पू ल प्रप ज मिता य पू ने क्षान सं रा जय के का नि ल स धा हं वा लं ड यं वा ॐ
सर्व वि त व ज गं धा स्व धा वा ये त वा ॐ सर्व वि त व ड गि त ड व ह व ने स्व धा वा सि ध वा ॐ सर्व वि त व ज वा स
स्व धा वा ज जं का वा ॐ सर्व वि त ह ड म ड व स्व धा वा तं ला ति जा वा ॐ सर्व वि त प्र क्षा या प्र मि ता य जा म य स
मृ ड ड प्र ने स म य स्व धा वा ॐ व ज य ष्य स्व धा वा मा सा द क वा ॐ सर्व वि त व ड ने व ध स्व धा वा हो जा वा

कु

॥५॥

४४

स्वसिधो

स्वधायाजल वाः रुख वाक आसं रय जा ॥ द उ नार आर्गं वाः धाः ग्व व ग्वान द्यय सकर्ग क्लय वा सता इ नः
यिन्दु विसर्ज नः आसी वादः रिन्दु ध्रुयः स कता लकथ नः अका स मा लाहयः वा ध्रुय उय के सत उय के ॥
ताहापो स क्लस ग सीः अद का सीः वाक जा जी तु ध्या दे वा रु प र स हा प दी दि म ग त अ मू व वा स ध्या य य
रि स हा ज ज न वा आ स वा व र्था लोक धा तु म नू ग र्दं तु स धा वा गु च न स फा रु न का सी विसर्ज न ग
धून का आ र्मि द नः धा ज स्वा त य नी य कि ति न आ सि वा द स न्य ज वि स ज नः सी ध न य स र्ध न य ॥
पः द उ ता र्ध धा गि ला क ग यि न्द्रु वि धि र्द न वा ॥ रा सी न द १ ८ द न स सि ध य का द्र व्द दि र्द व र्द

स्वसिधो
विसर्ज नः
विसर्ज नः
विसर्ज नः

४५

व्यासस्नान॥ उंज काजमूर्ख॥ वलिश्रविष्टान॥ ईंमर्ह॥ म३ लाधि
 स्नान॥ मनुष्यधनपूनहरीकीः श्रत्येसाहा॥ पूनपाइअनीहीकनेत्॥ डि
 किंकायेनपमराजनीमीकायेनामासकोपुपुद्विउजावजवजहस्ताईकागे
 नाक्रायेहफुदिउजावजवजहस्तातपयोरामसहाजागलदवीरुतंप
 अह॥ पून४ हडीकी श्रत्येसाहासाउंसवरुककामिनि सधरुड रमंधनि
 गुह्मवजक्रोधस्वयी सर्वद्रवयापिनिराधयरह॥ ईंमृणैमृतप्रव

४ गुणनकरक वन्सू शय जद नपनिजत ॥ चक्रपद्मवज वाकविमुद्धि
कुर्यात् ॥ रूपस्वध्व वेला चनै वेदनास्वध्व वजसूर्य सहा नस्वध्व पद्मनय ग्व
नसस्वा नैध्व वजना जविहान सवैध्व वजसत्त्व सर्वत भागत ग्रीह नैध्व वज ॥ ॐ
वक्रुषामाहवजि र्भातयो धमवज स्वानय त्रिध्व क म्याजि वक्रुष नागवजि र्भासमा
नय ४ पृथिवि धातुपातनी आप धातुमानि ^{जा} नै जा धातु कर्त्तव्य वायू धातुपद्मन
य ग्वजी आकाश धातुपद्म जानिनी ॥ ५ पद्मनी आलि कालिपकिं नैध्व नैका

॥ समा ॥ नमः सूर्यमन्त्रं तन्मन्त्रं कालं लपानि नाम नमः रगवैतं कृष्णवर्णं परं प्रथमं रजा ॥ दि ॥
॥ ३ ॥ व्यावज्जरघी ॥ धनीदितियास्यी उवज्जगुनिपासं नितियास्यी उमज्जगुनिपासं उमरेवे ॥ ३ ॥
कृष्णं स्यामाजकपीता का का स्यावृ ॥ उत्र का स्याग्धामा ग्वनाम्यानाजका सुक्
नास्यापिता यन जटिकृष्णीता यमद्रोपीतन कायमद्रिद्रिज का स्यामायममर्धनी
स्यामवृष्ठा ॥ नतासंभनिसूक्त यरुं ररुट स्याहा ॥ उं गृद्रा ररुं ररुट ॥ उं गृद्रा
पयं ररुं ररुट ॥ उं जानयं ररुं ररुट ॥ रगवैतं चालाज ररुं ररुट ॥ ॥ नता ४ मालिका ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ गतमधुहं कायनविश्ववर्जं हं कालाधिष्ठितं तद्रूपं
स्मिमायकवद्वर्णप्रमानं वज्रकनिका रूपं त्रधागतं वज्रसमीहमिविलयं ॥
ॐ मदनिवर्जं रववज्रवर्धं हं हं रुरु ॥ ॐ वज्रप्राकाशं हं हं ॐ वज्रपेज्जपहं
ॐ वज्रवीगानहं हं ॥ ॐ वज्रसलजं न सगं ॥ ॐ वज्रजालानलाकाहं ॥ हं काय
जम्भुदिरागप्राकालवहिकूवेलनिसिगी ॥ ॥ ॐ न्यादिविद्याहृदयकीन
यत् ॥ ॐ घघघाटयस्सर्वविद्यासर्वदृष्टानहं हं ॥ ॐ किलयस्सर्वपापा

॥ समा ॥

॥ ४ ॥

नहं हं ॥ उं वज्र किल य वज्र धन आहाय यन्ति सर्व विद्य विनाय कानी काय
वा क चिह्नः क जान किल य हं हं ॥ उं वे ज म्मा ऊ न व ज किल य मा का ट प र हं र
हं ॥ ४ ॥ ॐ ति नि वि द्यु वि स व य न् ॥ त नः स्व रु द स्तु हं का ल स्मी हि ज ग द्ध
कृत्वा म ग नि र्द र व नै ग त्वा न् ॥ म ना दि र्म ति ह य न् ॥ द ग्री च कु र्म म्ब न र ग वै त
म प लि वा न र ग व ति स मा प नैः स म य म न् ॥ ५ ॥ ग तो ह्म रु य ऊ न स्मी
ला रि ॥ म रा कृ र्क ह्म न च कुः ॥ म रा का स द भो दृ ष्टा म रि मू र्खे म रि म रि र प र म् ॥ स म्

॥ दि ॥

॥ ४ ॥

२५

[illegible]

लायहं ह्रस्वाहा ॥ उं काली कू लायहं ह्रस्वाहा ॥ ठं कली कट हं प्र वायहं ह्र

114

25

साहा ॥ उं मृद दृहासयहं दृ दृत्वाहा ॥ उं लक्ष्मीवनहं दृसंय दृ हा ॥ उं धा नौध
कालायसाहा ॥ उं किलिरन वायसाहा ॥ ॥ पंथीउहालपूजाध्यासाहा ॥
॥ वादनमुक्ति ॥ ॥ सर्वहृदयनसदाहृदयगदधप्रसाद्वर्कः विनामनिप्रियो उर्ग
श्रीसम्बलनमोमुक्ति ॥ ॥ व्याकृविस्वमहाहृदयनः सर्वात्मनिसदाष्टिः कृपाक्रादमहात्रोडि
श्रीसम्बलनमुक्ति ॥ ॥ तर्पण ॥ ॥ उं मशरुगवर्तविलवित्रयवजायहं
दृ ॥ उं माहाकल्याणिसनिलस्वजायहं दृ ॥ उं जयमकूटालकयहं दृ ॥ उं

॥ समा ॥
॥ ६२ ॥

शकलाग्रतिरवनमूखाय हूं हूं हूं ॥ उं सह गं उजलास जाय हूं रूं हूं ॥ उं पं लस
पागं दगं गिहूलखलाय हूं हूं हूं ॥ उं वा पुत्रमावलधलाय हूं हूं हूं
उं महाधूमीधका जाय हूं रूं हूं हूं स्वाहा ॥ ॥ न तापाय देगनाः शतकालिभ्रमो
दिगमयमपिलनिहिदाधाना पुतिदेसयामि ॥ पूनलकर्जसम्वर्तविलधग्रावक ४ र्वं
जिनागमः जिनसूखसंरगानिः कूसलानी अन्मोदिनानिः बोधिं स-म्यकलिनाम
यामख ४ जिनकन्यादिगुयोः सर्वलसननीयातलिः सर्वलावेन बोधिबोधिं विलध ६

॥ दि ॥
॥ ६३ ॥

३४

दि॥ पृथ्व्यासः पंचाप्रहा ल॥ लास्याः ४ धर्मः ४ वा ४ मनुनि ॥ ॥ ॥ ॥
बलिवलिशवना ॥ ॥ नतार्येकालेन वायुर्मदुलं तपरकादिपत्रिपुलि।
गैतदूपात्रिनेजातभृजिमणुलेः गगसूकुआकाले रिसितपद्मगजनीः मूत्र
विषयचत्रिकायवधित ॥ उँगँ भों जिँ र्वँ हूँः लोँ मों पाँ गों वँ कान जात पंक्षु म
गपंक्षु प्रदिपद्रूपे नानिष्यद्यः वायुप्रानत डोमिनाग्नि तप विप्रिर्नैकिजा ऊनादि
दीर्गहिनलानूव नूद्रवद्रूपे दृष्टाः न रूपनिविता र्वं नितं कृत्वा ॥ ॥ आत्रिका

॥ समा ॥
॥ ट ॥

लिखित्युं अहं कायेत्यमृतामनः उं यमिच्छि ह्येव देवास्त्रिनिता जग
दर्थं कृत्वा सकला मृतं तसमानियं वहिर्दिक् प्रविश्यः जधानं धूविजं सप्रतिष्ठा ॥ दि ॥
रायनियं ॥ उं न तां कालादिर्मपि कृत्वा विजिनवपीक ॥ उं अहं ॥ ॥ वलिग्राय ॥ ट ॥
धनं ह्यवर्तते यो प्रहल ॥ ॥ भालिकायलिन न वन्द्युः सत्यवकवद
यानं हं काल इष्टा वा मृत्या नानृगाताः सर्वधर्मा ना उं लस्यता ॥ ॥ वातवर्धमा ॥ २९
उं मृत्युना दृष्टा ॥ सर्वधर्माः द्रव्यप्रमानं समर्थं पुमानैतद्द्रव्यं वा वस्य लप्रमानं ॥

जी अगाथा वषवजी घु लयाजी घा वजी वके जागवजी स्य जमा लर्यवजी सवीयवतषी वव्येवजी ॥ पृथी व
दुयातन आपका उमापिली तजी वउजा कर्षली वायु धा दुयमनृव्य ग्वजी मासका उपम छालिली ॥ पृज
अलिकालिये किम कर्षका प्र लर्ये म लुले तसका हंका प्रयपित्तमनरगवर्त हसुवर्त पुरु उप्रथम उजा
वीवज वजय लधनी देतीया र्थारव म तऊनी पा म रतीया सी उम प्रख दी गी वउ मूरखे रु रु ग्ध मज कपी ते ॥
काका ग्ध रु रु उ लूका ग्ध ग्ध मा ग्ध मा ग्ध जका ग्ध कजा ग्ध पीता ॥ यम गधि रु रु पीता यम दूति पीत जका
यम दी धु जका ग्ध मा यम मधनी ग्ध म रु रु ॥ उं री निरु रु रु रु रु ॥ उं ग रु रु रु रु रु ॥ उं ग रु रु रु रु रु ॥

ॐ शानयहारगवन्विद्याप्राज्ञरुद्र ॥ ॥ ततोभाका जगकात्रलसूर्यमलुर्लतसध्वरुं कात्रे तवि मा
ज्ववर्जं हूं कात्राधिष्ठितं तदस्मिन्नायकं लप्रमा लं वज्रकनिकात्रयेन धागतीवजमयी हस्मिविविद्यय ॥ ॐ
मदी नीवजीरुववज्रवन्धुं ॥ ॐ वज्रपाकात्र हूं वें हूं ॥ ॐ वज्रयै जत्र हूं यें हूं ॥ ॐ वज्रवीनान हूं रवं हूं ॥ ॐ वज्र
गुपजालगं गं ग ॥ ॐ वज्रकालानलाक्ष हूं ॥ ॐ कात्रजा एदिरा प्राकात्र समीक्षय निधसिगान् ॐ आदिवि
घ्नान् स्रवय किलय ॥ ॐ घघ्याघाट्य रसर्वविघ्नान् रुद्र ॥ ॐ किलय रसर्वयापान हूं रुद्र ॥ ॐ वज्रकिलय व
जधनमाश्रयति सर्वविघ्नविनायकानीं कायवा क्वाखिरुवजान् किलय हूं रुद्र ॥ ॐ वज्रमूकनवज किलय ॥

[illegible]

ॐ जटामक्रयत्कराय हं रुरु ॥ ॐ वृषाकपा लाग्रहीय नमूषाय हं रुरु ॥ ॐ सहस्रज गस्त्याय हं रुरु ॥
स ॐ पत्रमया रभयत गृत्तरवद्दी गधात्रि श हं रुरु ॥ याघ्रिजीवी वपधाय हं रुरु ॥ ॐ मस्त धूमा श्वका
॥ ५ ॥ प्रवपू उवाय हं रुरु ॥ ॐ मिमकु मय न ॥ तत्तथा पाय द ग ना कृत का नि ग म नू मा दित मद्य मखिल मि
दित दाषा नी प्रति दे ग यामि पू न ग ४ पू न न ल स म्ब नै वि द ध ग्रा व क र व ग जि ना रु म जि न मू ग म उ ता नि कू ग
लानि मू नू मा दि ता नि वा धो स म्प क जि नो म या म्प व जि न प्र त्ता दि गि त र्यं ग प्र ल या व कू ग ता स्मि न स र्व ग
५५ ध व धा धा वि हं वि द ध मू नू ल प्र मा र्ग क था स्य वे द्या दि यो ग ४ ॥ ॥ ग ता मी गी क रू ना मू दि ता प्र उा च ॥ ५५

ॐ

जिवि वयमाशुविदितहविष्णामि वाधिविहकवत्सा गथागतकूलपुत्रममाह्वान
सैरवमसुमेदिविष्णुहिदिउऊहियमनूहजं उंसनिपागह वेह देसर्वचूधनि
मैतना ॥ धन निलांजन ॥ ॥ उं आ ४ वजयक्रुसर्वपापविघ्नमपानरुसिं कूर
हूं हूं हूं कापका ॥ उं आ ४ वजयक्रुसर्वक्रुस सग्निसंति कूर हूं हूं हूं
खस्यान ॥ ॥ उं आ ४ वजयक्रुसर्ववपनमानानपनये हूं हूं हूं चमना ॥ ॥ उं आ
४ वजयक्रुसर्वपून्धह्वानसैलानान्धय हूं हूं हूं ॥ धजाग्वजा ॥ ॥ उं आ चमनं प्र

नियच्छस्वाहा४सर्वर्तय॥ वाउंरुनरसंतुत्तं२००दियजूवनेहूं हूंफ्टृ२साहावाथन
होमा धामेऽवि लुचि न ज्जमका स्यान् नवदेसक्र च धाला मता ता यज पलपैः यधंभ्य
१२ उति॥ वाथन४अग्न्य कूणु नम४चत्वानथिय॥ वाउं वज त्वशा४धा न ज राकू सम्भा १२
पन॥ वाग५४००मे महा कू स्यादिव्या प्रविष्टाय क्र देवता बूर्ध४धर्म४संगृदिता
पृथिविजाता इ गार्गी जजमानस्यः श्रु कथं सर्व विद्ये प्र सां कि व की कुर्वनु स्वसि
यच्छस्वाहा॥ वाकादिगसंपूजा वाथन४हामासि कन के पूजा४सित नै प्रतिपादिषू

जा॥ वाचहान्ठायकवाथनशसिनम्बुङ्गनाडावाके४ससिवाप्ययादि२३ं३३ग्नेदि
दिपविषांष्टमहाश्रीयरुव्यकव्यवाहनायदा नपती३३मूकस्य३३मूकनिमिया
थन३३ग्नेरुपापनंशत्ररहेहं४थनकुसत्रषन३३ग्नेरुसस्यंहावनावा वा३३ग्नेरु
लिता३३ग्नेरुसधपंकात्रजं३३मममात्रंवा३३नश्यत्रिलिजा३३ग्नेरुसमष्टुर्न३३काला
रुच्यपितवल्ममषमूषं३३वुर्दुर्जं३३वाम्यर्ददकास३३त्रुधर्न३३सचावपदा३३मालाधर्न
पितावनाहन३३४३प्रविगवि३३नर्न३३जतामकुनधर्ननी३३वजसत्तन३३द्वर्न३३मपिन

हामा

१३

समय अग्निविशवा ॐ हहिमहा रं न धिजसस्व गहिता हंतिमहा न श्मि सनिहि
ता रवस्वाहा वा यन हाना अग्नी आवाहन वा ॐ आतर्कि ऊ हं इति न जहो
मूद्रायाद गहिता यन मूद्रा केन वा यन निलीजन क्षीय वा मूद्रा वा ॐ अग्निदि ॐ प
दिव्या विषां विषमहा ग्रीय हव्य कव्य वाहनाय दृश्यं ऊ हं वहां वा अग्नि स मूद्रा केन ॥
ॐ वज्र ऊ हं संघनेष न अग्नि सहाया ॥ अग्नि प्रवस का नाय पा ध्यायं अर्घ्यं प्रतिष्ठ
स्वाहा ॥ मूद्रा सा ॥ ॐ अग्नी प्रवस का लाय पा था दि प्रतिष्ठ स्वाहा ॥ पाद ग ॥ ॐ अ

दि
१३

३४

एनप्रवस्त्रायायश्रावमनैप्रतिरुस्वाहा॥ सुतुस॥ ॐ वज्रयज्जग्रा॥ ॐ सर्वेनथा
गतकायाविस्वधनेसाहा॥ ॥ धन४पै४जा४धै४गु४पै४चा४मृ४न४पै४च४रु४न४स४ना
ना॥ पै४च४प्र४हा४ल४पू४जा॥ ॥ पै४जा४धै४गु४ति४त४त्य४न॥ ॥ धन४धन४का४च४के॥
ॐ वज्रसत्त्वाश्रा १०८ वाज्रजमाननकासाचकेः रूपयके॥ ॐ तगुजगिर्मूष्यनै
कापनयवज्ररूपप्रमानैगुक्तवज्रविरुय४जानं४न४न४स्त्रि४त४गु४च४न४मू४षा४व४के॥
थवरमैगुनघिताकृतिद्वय॥ ॐ जग्नस्वाहा ३ घृता॥ हौं विद्वक्धननद्याजडा

होमा

१४

द्वय॥ अर्काय स्वाहा॥ अर्कसि॥ उं वज्रसामाय स्वाहा॥ पिनासि॥ उं वज्रां गत्राय
स्वाहा॥ लयासि॥ उं वज्रवर्धाय स्वाहा॥ अपामासि॥ उं वज्रजहाय स्वाहा॥ इम्बने दि
सि॥ उं वज्रअनिजनाय स्वाहा॥ सत्रिकथसि॥ उं वीधिविआय स्वाहा॥ उगलतसी
॥ उं वज्रनकाय स्वाहा॥ पनाषसि॥ उं वज्रविआय स्वाहा॥ वस्तनरसि॥ उं मधून
स्वाहा॥ मधूकाकर्तसि॥ उं अस्त्राकाय स्वाहा॥ अस्त्रयसि॥ उं सर्वपापप्रमलाय
स्वाहा॥ धैकवसि॥ उं वज्रसहकात्राय स्वाहा॥ गहानिति॥ उं वज्रहिलतिका

३५

यस्वाहा॥ हिलानकसि॥ ॐ वज्रमदनायस्वाहा॥ मदकं ० का॥ १२॥ ॐ वज्रायस्वा
हा॥ वा ४॥ वा ४॥ स्वस्वान॥ ॐ सर्वपापदहनवजायः सर्वपापदहस्वाहा॥ हा ॥
ॐ वज्रपुत्रस्वाहा॥ मायन॥ ॐ वज्रधामजायस्वाहा॥ ४॥ ॐ वज्रघसमनायस्वा
हा॥ ४॥ ॐ वज्रविजाजायस्वाहा॥ स्वानवा॥ ॐ वज्रमहावत्यायस्वाहा॥ ४॥
ॐ वज्रायस्वाहा॥ ४॥ ॐ वज्रमाहावत्यायस्वाहा॥ ४॥ वज्रन॥ ॐ वज्रपितामायस्वा
हा॥ कर्ण॥ ॐ सर्वार्थसिद्धयस्वाहा॥ ॐ काप्रे को॥ ॐ सर्वसंप्रदयस्वाहा॥ वज्राः

श्रीमा

१५

धृजा ॥ उँ वज्रजा श्याय स्वाहा ॥ न वा ॥ उँ म्रा द्रुसन रु लाय स्वाहा ॥ कृत्तसि म्राने द्य ॥

पै४ना ४ ध्यं ४ गुति ॥ सुला पात ससा द्द्राया च वा कृयाय द्य ॥ उँ वज्रसस्त्र म्रा ४३ ॥ दि

थेन धेन तया वद्र्य वा कृ ॥ सुस्ति वा कृ ॥ उँ म्राने दि पदिया विषा विषमहा श्रायः १५ =

हय क य वा हा नायः दान पति ज ज मानसाः ॥ म्राने निमित्तार्थ न उँ म्राने पनी म्राने

रुति प्रति रु स्वाहा ॥ पै४ना ४ ध्यं ४ गुति ४ ॥ उँ सस्त्र न हाय हा मस ॥ उँ वज्र म्राने च मना

दिक् रु ला लोको रुत रुना म्राने विलायः ॥ वा का का गाना यदः रुत कमल वं द्रा सं

३१

यस्याहा॥ उ हलसकी॥ उँ वज्रकंधायस्याहा॥ सकिदकी॥ उँ वज्रदिय्यजिंसाहा
॥ सायिना॥ उँ वज्रपिक्की कायस्याहा॥ पीचयकं वामधि॥ उँ वज्रपिसम्यस्याहा॥ मधि
बधि॥ उँ मूलरुलायस्याहा॥ २ न॥ उँ वज्रमातुंगरुलायस्याहा॥ नसि॥ उँ वज्रग
तिरुलायस्याहा॥ हलरुलदकी॥ उँ वज्रकउलिहलास्याहा॥ कजा॥ उँ व
ज्रूरुलयास्याहा॥ ३ ॥ उँ सर्वत्रागप्रसमलायस्याहा॥ जज्जेउपधिसर्वउ
पधिरुकी॥ उँ वज्रगौंदलरुलायस्याहा॥ ज्वयमव॥ ॥ धनस्वस्तिवाकन

पदये अरुनादिपवित्राविषहयकचवाहनायदानपीतिजमानस्यमसूकान
 होमा मयाथनःमूत्रपूनाहतिप्रतिच्छावाहा॥ १॥ पवीप्रहानपूजाजगमदि
 १७ नकाकायपायसमाफयायविसजनःसघनकायचितपूजादकनाविहद १७
 कछपातसरांगमतस्यदकइयाथनजाजगमहतियाय॥ ३॥ तस्मादजायमद
 धिपतिस्वसनिप्रविचिंतुयंतुःअद्यादिकंइत्युंअहचकचवाहनायःसन
 पतिजऊमानस्यमसूकस्यतांतिस्वसिंथासिंकुनूरदंकरस्वाहा॥ ॥

३८